उपरोक्त विषय अपने प्रकार का अनोखा विषय है, जिसकी आज के प्रसंग में बहुत सख्त ज़रूरत है। क्योंकि यह कालचक्र तो सदा घूमता ही रहता है, समय तो बदलता ही रहता है और परिवर्तन इस भौतिक जगत का

बदलते समय में आध्यात्मिक बुद्धि की आवश्यकता

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

एक अटल नियम है परन्तु सभी इस बात को मानेंगे कि पिछले 60-70 वर्षों में जिस प्रकार समय बदला है, वैसा पिछले पूरे इतिहास में कभी नहीं बदला। विश्व में अगणित अस्त्रों के निर्माण, मानवीय जनसंख्या में अत्यन्त तीव्र वृद्धि, पर्यावरण में चिन्ताजनक प्रदूषण, फैलती हुई गरीबी और बेरोजगारी जैसी भयावह और जटिल समस्यायें पैदा हो गयी हैं। समाज में अभूतपूर्व नैतिक पतन हुआ है। पारिवारिक सम्बन्धों में स्नेह और सहयोग का अभाव महसूस होता है। मनुष्य के अपने जीवन में भोगवाद दावानल की तरह बढ़ा है और दिनोंदिन मनुष्य अधिक स्वार्थी होता गया है। सारे वातावरण में तनाव की स्थिति है। दान, उदारता तथा आतिथ्य का स्थान निजी संकीर्णता ने ले लिया है और अहिंसा का स्थान घिनौनी हिंसा ने। इन्हीं छह-सात दशकों में प्रायः हरेक के मन में विकृतियाँ बढ़ी हैं और हरेक से ऐसे प्रकम्पन वातावरण में फैल रहे हैं जिनसे सबकी मनोस्थिति में हलचल, चिन्ता, भय, उदासी, अभद्रता इत्यादि ही का रंग बढ़ा है।

आध्यात्मिक मेधा, सद्विवेक अथवा प्रज्ञा की ज़रूरत

यदि हम गहराई से विचार करें तो हम परिणाम पर पहुँचेंगे कि आज हमारे सामने जो विकराल वैश्विक समस्यायें उपस्थित हैं, उन सभी का हल भौतिक ज्ञान-विज्ञान से तो हो नहीं सकता। उनके प्रयोग से यदि कोई समस्या कुछ काल के लिए थोड़ी हल भी हुई है तो उसके स्थान पर उसी हल के परिणामस्वरूप ही कोई दूसरी समस्या भी उपजी है। उन समस्याओं का अपना मूल कारण भी नैतिकता का ह्रास है। अतः चाहे विश्व की समस्यायें हों, चाहे हमारी निजी अवस्था हो, उन सभी के वास्तविक हल अथवा निराकरण का उपाय तो नैतिक एवं आध्यात्मिक बुद्धि अथवा प्रज्ञा ही है। आध्यात्मिक प्रज्ञा हमारी बुद्धि की वह

आध्यामिक प्रज्ञा क्या है?

स्थिति, गुणवत्ता अथवा क्षमता है जिससे कि हम झट से किसी बात को ठीक से समझ लेते हैं, व्यक्ति को भाँप लेते हैं, परिस्थिति का अवलोकन कर सकते हैं और होने वाले परिणामों की झलक पा सकते हैं। यह हमारे अभ्यासों तथा शुभ प्रयत्नों का वह फल है जो विकसित होकर हमें यह योग्यता प्रदान करता है कि हमारी मनोस्थिति एकरस बनी रहे और हम निन्दा-स्तुति, घृणा-द्वेष, हानि-लाभ, जय-पराजय और विघ्नों-तूफानों में रहते हुए भी एक निर्विघ्न तथा अचल स्थिति में रह सकें, ठीक निर्णय कर सकें, परिस्थिति का विश्लेषण कर सकें तथा अनेक प्रकार के प्रलोभन, उत्तेजनायें, उकसाहटें सामने आने पर भी हम अपनी नैतिकता में दृढ़ बने रहें। यह बुद्धि की प्रफुल्लित अवस्था है, जिसमें दैवीगुणों का विकास हुआ होता है और मनुष्य भय, चिन्ता तथा दूसरों के दबावों में भी निर्द्वन्द होकर कार्यरत रहता है। ऐसी बुद्धि वाले व्यक्ति को नकारात्मक विचार नहीं आते और वह किसी का बुरा नहीं सोचता। वह कोरे स्वार्थ से ऊपर उठकर रहता है और भलाई के पथ पर मजबूत कदम से आगे बढ़ता है।

आध्यात्मिक ग्रंथों में आध्यात्मिक प्रज्ञावान मनुष्य की उपमा हंस से की गयी है। जैसे हंस मोती चुगता है और कंकर-पत्थर छोड़ देता है, वैसे ही दिव्य प्रज्ञा वाला व्यक्ति शुभ मनोरथों, भावों और विचारों ही को ले लेता है और व्यर्थ से सदा बचकर रहता है। उसका उत्साह उदम्य होता है। उसकी उपमा कछुए से भी की गयी है। जैसे कछुआ अपना काम करने के बाद अपनी इन्द्रियाँ समेट लेता है और अचल होकर पड़ा रहता है, वैसे ही रूहानियत की बुद्धि वाला व्यक्ति भी कर्म करने के बाद अपने विचारों और कर्मों को समेट लेता है और अपने मन की गुफा में मग्न होकर प्रभु-प्रेम में विलीन होकर, आत्मरस के स्वाद में विभोर होकर आनन्दित होता रहता है। उसका मन ही मानसरोवर होता है। उसका विचार ही गंगाजल होता है और वह उसमें डुबकियाँ लगाते हुए पावन-पुनीत बनकर समाधिस्थ हो जाता है। "ॐ नमः शिवाय, ॐ नमःशिवाय" - इस मंत्र का आलाप करने की उसे आवश्यकता नहीं होती, वह इसके अर्थस्वरूप में स्थित होता है। वह उस परमात्मा रूपी साजन की सजनी बन या उस पिता का पुत्र बन, शिक्षक का शिष्य बन या सखा भाव से द्रवित होकर उसी के संग-संग होता है। वह इस संसार में रहते भी इससे उपराम अथवा न्यारा होता है। परमात्मा रूपी शमा पर वह पतंगे की तरह विचार चक्र लगाता है। जैसे चकोर चाँद को देखकर बेहताशा से ऊपर उसकी ओर उड़ जाता है, वैसे ही उसका चित्त रूपी चकोर उड़कर प्रभु की ओर जाता है।

इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संस्थापक ने यह भी कहा है कि आत्मिक बुद्धि वाले व्यक्ति के मन में कोई लौकिक कामना व इच्छा नहीं होती। वह जनहित के लिए व सबकी सेवा के लिए, प्रभु के प्रति समर्पित बुद्धि होता है। वह कर्मयोगी होता है अर्थात् उसके हाथ कर्म में प्रवृत्त होने पर भी उसकी बुद्धि योगयुक्त होती है। वह राजा जनक के समान विदेह अवस्था में बना रहता है और कुशलता पूर्वक कर्म करता है। उसके जीवन में खुशी, उत्साह, सेवाभाव सदा बने रहते हैं। दूसरों के दुःख दूर करने के लिए और स्वयं पूर्णता तक पहुँचने के लिए उसका जीवन सादा और स्वभाव में दया, करूणा तथा वृत्ति में त्याग होता है। चूँकि व्यक्तिगत एवं विश्व की सभी समस्यायें हमारी बुद्धि के नैतिकता-रहित, मन के अंकुश-रहित, भावावेगों के मर्यादा-रहित हो जाने के कारण से हैं, इसलिए आज ऐसी बुद्धि अथवा प्रज्ञा की ज़रूरत है। ऐसी बुद्धि होने पर अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, विज्ञान तथा तकनीकी कलाओं तथा संरचनाओं, साहित्य तथा शिक्षा, प्रशासन तथा व्यवस्था, न्याय तथा विधि-विधान सभी को एक नयी दिशा मिलती है। इनमें नया उत्कर्ष होता है।

वडोदरा-अटलादरा। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'महिला सशक्तिकरण के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन' विषयक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अरुणा, डॉ. दृष्टि शाह,फ़ीजियोथैरेपी, मेधावी व्यास,इमेज कंसलटेंट, भाग्यसेतु शर्मा,एम.टी.वी. रोडीज़-पार्टिसिपेंट, सोनाली देसाई,गुजराती टीवी एवं फिल्म अभिनेत्री, वत्सला पाटील,प्रख्यात लोक गायिका, आर.जे. विधी, निशा बहन, बीना बहन तथा अन्य गणमान्य महिलायें।

देहरादून-उत्तराखण्ड। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए मधु शर्मा, चन्द्रा पन्त, कविता बत्रा, ब्र.कु. मंजू, नलिनी गुसाईं तथा उषा कपूर।

कोरापुट-ओडिशा। शिव जयंती के अवसर पर फॉरेस्टर गिरीश सतपथी, फॉरेस्टर सिमांचल पंडा तथा फॉरेस्टर सुधीर बेहेरा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. स्वर्णा तथा ब्र.कु. रंजीत।

मानसरोवर-राजापार्क। शिवजयंती के उपलक्ष्य पर ध्वजारोहण से पूर्व ईश्वरीय स्मृति में ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. पिंकी,मालवीय नगर, ब्र.कु. जया,तारों की कुंट, ब्र.कु. मिथलेश,मिलाप नगर, ब्र.कु. सीता, ब्र.कु. महिपाल, हरि भाई, मूलचंद भाई, लोकेश भाई तथा अन्य।

सूरतगढ़-राज.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए श्रीमति कमलेश गुप्ता,चेयरपर्सन,अग्रवाल महिला समिति, श्रीमति पूनम,एडवोकेट, श्रीमति नीलम सांगवान,प्रिन्सीपल, ब्र.कु. रानी,सेवाकेन्द्र संचालिका, श्रीमति पार्वती,कॉन्सटेबल तथा ब्र.कु. साक्षी।

सिंगापुर-मलेशिया। 84वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर आयोजित 'शिव दर्शन-पंच भूत स्थलम' कार्यक्रम में शरीक हुए पार्लियामेंट स्पीकर तन चुआन जिन, हिन्दु एन्डॉमेंट बोर्ड के सी.ई.ओ. राजा सागर तथा ब्र.कु. भाई-बहनें।

अहमदाबाद। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम में मंचासीन हैं नेहा के.शाह,सलाहकार समिति,नारी संस्था, डॉ. रिद्धि शुक्ल,सह संस्थापक,नारी संस्था, ब्र.कु. प्रतिभा दीदी,केन्या, ब्र.कु. चंद्रिका दीदी,उपाध्यक्ष,युवा प्रभाग तथा डॉ. दर्शना ठक्कर,स्पर्श फाउण्डेशन।

जयपुर-सोडाला(राज.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. ललिता,सीनियर स्पेशलिस्ट,एम.बी.बी.एस.एम.एस, नीलम मित्तल,सीनियर लेक्चरर इन कॉस्ट्यूम डिज़ाइन,गवर्नमेंट पॉलिटेक्निक कॉलेज, मनीषा माथुर,पी.जी.एम.,बी.एस.एन.एल. टेलीकॉम कंपनी, ब्र.कु. स्नेहा तथा अन्य।